प्रमुख पत्रिकाएँ -

- **सरस्वती पत्रिका :-** 1903 ई. से दिसंबर, 1920 ई. तक इन्होंने सरस्वती नामक मासिक पत्रिका का संपादन कर एक कीर्तिमान स्थापित किया था, इसीलिए इस काल को हिन्दी साहित्येतिहास में 'द्विवेदी-युग' के नाम से जाना जाता है।
- **सरस्वती पत्रिका के संस्थापक – चिंतामणि घोष**
- **प्रथम सम्पादक - बाबू श्यामसुंदर दास**
- **द्वितीय सम्पादक – महावीर प्रसाद द्विवेदी**

पत्रिका	संपादक	स्थान
सरस्वती	महावीर प्रसाद द्विवेदी	काशी
समालोचक	चंद्रधर शर्मा गुलेरी	जयपुर
इंदु	अम्बिकाप्रसाद गुप्त	काशी
प्रताप	गणेश शंकर विद्यार्थी	कानपुर
मर्यादा	कृष्णकान्त मालवीय	प्रयाग
प्रभा	कालूराम	खंडवा
सुदर्शन	देवकीनंदन खत्री	काशी
पाटलिपुत्र	काशी प्रसाद जायसवाल	पटना
अभ्युदय	मदन मोहन मालवीय	काशी

छायावाद युग

समयावधि- 1919 से 1938 ई. तक

- "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है" डॉ. नगेन्द्र ने कहा|
- लिखित रूप में छायावाद शब्द के प्रथम प्रयोक्ता मुकुटधर पांडेय थे , इन्होंने ' हिंदी में छायावाद ' लेख में सर्वप्रथम इसका प्रयोग किया |
- छायावादी युग के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

जयशंकर प्रसाद (1889-1936)

छायावादी रचनाएं -

1. झरना (1918),
2. आंसू (1925),
3. लहर (1933),
4. कामायनी (1935)
5. अन्य रचनाएं :

उर्वशी, वनमिलन, प्रेम राज्य, अयोध्या का उद्धार, शोकोच्छवास, वभ्रुवाहन , कानन कुसुम, प्रेम पथिक, करुणालय , महाराणा का महत्व ,
चित्राधार (ब्रज भाषा में रचित कविताएं)

❖जयशंकर प्रसाद कृत ' कामायनी ' महाकाव्य का संक्षिप्त विवरण-

- अंगीरस - शांत (निर्वेद) रस है
- दर्शन - शैवदर्शन के अन्तर्गत आने वाले प्रत्यभिज्ञान दर्शन की मान्यताओं के अनुरूप समरसतावाद एवं आनंदवाद की स्थापना की है |
- कामायनी का उद्देश्य - आनंदवाद की स्थापना है |
- मुख्य छंद - ताटंक छंद है |
- कामायनी के सर्ग- प्रसाद की अंतिम कृति ' कामायनी ' है , जिसमें 15 सर्ग है |
- 1 . चिन्ता , 2. आशा , 3. श्रद्धा , 4. काम , 5. वासना , 6. लज्जा , 7 . कर्म , 8. ईर्ष्या , 9. इडा , 10. स्वप्न , 11. संघर्ष , 12 . निर्वेद , 13. दर्शन , 14. रहस्य , 15.आनन्द
- कामायनी में प्रतीक -- मनु- मन , श्रद्धा- हृदय, इड़ा - बुद्धि , कुमार- मानव ,
- आचार्य शांतिप्रिय द्विवेदी ने ' कामायनी ' को छायावाद का उपनिषद कहा है
- गजानन माधव मुक्तिबोध ' ने कामायनी को फैंटेसी माना है |
- नंद दुलारे वाजपेयी ने ' कामायनी ' को नये युग का प्रतिनिधि काव्य माना है |

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1897-1962)

- निराला जी का दार्शनिक आधार 'अद्वैतवाद' है |
- इन्होंने 'मतवाला' और 'समन्वय' नामक पत्रों का सम्पादन भी किया है |
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का 'निराला' उपनाम, 'मतवाला' के तुक पर रखा गया था |
- निराला को 'महाप्राण' कवि भी कहा जाता है |

छायावादी रचनाएं :

1. अनामिका (1923),
2. परिमल (1930),
3. गीतिका (1936),
4. तुलसीदास (1938)

अन्य रचनाएं -- कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नए पत्ते, अर्चना, आराधना, गीत गुंज, सांध्यकाकली

प्रमुख कविताएँ -

1. सरोजस्मृति (1935),
2. राम की शक्ति पूजा (1936),

सांध्यसुंदरी, अपरा, पंचवटी प्रसंग, भिक्षुक, बादलराग, स्नेह निर्झर बह गया है, महाराज शिवाजी के पत्र, वर दे

वीणा वादिनी वर दे' , महँगू महँगा रहा , गर्म पकौड़ी , रानी और कानी , मास्को डायलाग्स , आदि |

सुमित्रानंदन पंत (1900-1977)

छायावादी रचनाएं :

1. उच्छवास (1920) ,
2. ग्रन्थि (1920) ,
3. वीणा (1927) ,
4. पल्लव (1928) ,
5. गुंजन (1932)

प्रगतिवादी रचनाएं : -

1. युगान्त (1936)
2. युगवाणी (1939)
3. ग्राम्या (1940)

अन्तश्चेतनावादी रचनाएं :

1. स्वर्ण किरण (1947) ,
2. स्वर्ण धूलि (1947) ,
3. वाणी
4. युग पथ

नवमानवतावादी रचनाएं :

1. उत्तरा (1949) ,
2. कला और बूढ़ा चांद (1959) ,

3. अतिमा (1955),

4. लोकायतन (1964 , महाकाव्य),

5. चिदम्बरा

काव्य नाटक : 1. रजत शिखर , 2. शिल्पी , 3. सौवर्ण , 4. अतिमा , 5. मधुवन , 6. युग पुरुष , 7. छाया , 8. मानसी , 9. ज्योत्स्ना

प्रमुख कविताएँ : नौका विहार , परिवर्तन , मौन निमंत्रण , बापू, बापू के प्रति , ताज , प्रथम रश्मि , आदि |

महादेवी वर्मा (1907-1988)

1. नीहार (1930),
2. रश्मि (1932),
3. नीरजा (1935),
4. सांध्यगीत (1936),
5. यामा (1940),
6. दीपशिखा (1942),
7. सप्तपर्णा (1960)

प्रमुख कविताएँ :

जाग बेसुध जाग , जाग तुझको दूर जाना , पंथ होने दो अपरचित , हे धरा के अमर सुत ! तुझको अशेष प्रणाम !

छायावाद के कवि चतुष्टय

- जयशंकर प्रसाद ,
- सुमित्रानंदन पंत ,
- सूर्यकांत त्रिपाठी ' निराला '
- महादेवी वर्मा

छायावाद के वृहत्त्रयी

- जयशंकर प्रसाद ,
- सुमित्रानंदन पंत ,
- सूर्यकांत त्रिपाठी ' निराला '

छायावाद की लघुत्रयी

- महादेवी वर्मा ,
- रामकुमार वर्मा
- भगवती चरण वर्मा

छायावाद के ब्रह्मा , विष्णु , महेश

- ब्रह्मा -जयशंकर प्रसाद
- विष्णु - सुमित्रानंदन पंत
- महेश- सूर्यकांत त्रिपाठी ' निराला '